बजरंग् बाण्

बजरंग् बाण्

निश्चय प्रेम प्रतीति ते,
विनय करैं सनमान |
तेहि के कारज सकल शुभ,
सिद्ध करैं हनुमान | |

जय हनुमंत संत हितकारी,
सुन लीजै प्रभु विनय हमारी |
जन के काज विलंब न कीजै,
आतुर दौरि महा सुख दीजै |

जैसे कूदि सिंधु के पारा,
सुरसा बदन पैठि बिस्तारा |
आगे जाय लंकिनी रोका,
मारेहु लात गयी सुरलोका |

जाय विभीषन को सुख दीन्हा,
सीता निरखि परमपद लीन्हा |
बाग उजारि सिंधु महँ बोरा,
अति आतुर जमकातर तोरा |

अक्षय कुमार मारि संहारा,
लूम लपेटि लंक को जारा |
लाह समान लंक जरि गयी,
जय जय धुनि सुरपुर नभ भयि |

अब बिलंब केहि कारन स्वामी,
कृपा करहु उर अंतरयामी |
जय जय लखन प्राण के दाता,
आतुर है दुःख करहु निपाता |

जय हनुमान जयति बलसागर,
सुर समूह समरथ भटनागर |
ॐ हनु हनु हनु हनुमंत हठीले,
बैरिहि मारु बज्र की कीले |

ॐ हीं हीं हीं हनुमंत कपीसा,
ॐ हुं हुं हुं हनु अरि उर सीसा |
जय अंजनि कुमार बलवंता,
शंकर सुवन वीर हनुमंता |

बदन कराल काल कुल घालक,
राम सहाय सदा प्रतिपालक |
भूत प्रेत पिसाच निसाचर,
अगिनि बेताल काल मारी मर |

इन्हें मारु तोहि सपथ राम की,
राखु नाथ मरजाद नाम की |
सत्य होहु हरि सपथ पायि कै,
राम दूत धरु मारु धायि कै |

जय जय जय हनुमंत अगाधा,
दुःख पावत जन केहि अपराधा |
पूजा जप तप नेम अचारा,
नहिँ जानत कछु दास तुम्हारा |

बन उपबन मग गिरि गृह माहीँ,
तुम्हरे बल हम डरपत नाहीँ |
जनकसुता हरि दास कहावौ,
ताकी सपथ विलंब न लावौ |

जै जै जै धुनि होत अकासा,
सुमिरत होय दुसह दुख नासा |
चरन पकरि कर जोरि मनावौँ,
यहि औसर अब केहि गोहरावौँ |

उठु उठु चलु तोहि राम दुहायी,
पायँ परौं कर जोरि मनायी |
ॐ चं चं चं चं चपल चलंता,
ॐ हनु हनु हनु हनु हनुमंता |

ॐ हं हं हाँक देत कपि चंचल,
ॐ सं सं सहमि पराने खल दल |
अपने जन को तुरत उबारौ,
सुमिरत होय आनंद हमारौ |

यह बजरंग बाण जेहि मारै,
ताहि कहौ फिरि कवन उबारै |
पाठ करै बजरंग बाण की,
हनुमत रक्षा करै प्रान की |

यह बजरंग बाण जो जापै,
तासौं भूत प्रेत सब कांपै |
धूप देय जो जपै हमेसा,
ताके तन नहिँ रहै कलेसा |

दोहा ||
उर प्रतीति दृढ सरन है,
पाठ करै धरि ध्यान |
बाधा सब हर करैँ
सब काम सफल हनुमान |